वैश्विक शांति एवं बुद्ध महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर : एक अध्ययन

डॉ0 राजेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर

वैश्वीकरण राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विश्वव्यापी समायोजन की एक प्रक्रिया है जो विश्व के विभिन्न भागों के लोगों को भौतिक व मनोवैज्ञानिक स्तर पर एकीकृत करने का एक सफल प्रयास करती है। वैश्वीकरण का सामान्य अर्थ है, विश्व का एकीकरण। आज का युग 'ग्लोबलाइजेशन' का युग है विश्व में एक छोटी सी जगह पर हुई घटना भी पूरे विश्व पर प्रभाव डालती है, जैसे– शेयर बाजार। वैश्वीकरण जो आधुनिक अवधारण है इसमें हम कई चीजों के लिए दूसरो पर निर्भर रहते है। इस युग में विकास के लिए हमें दूसरे देशों की सहायता लेनी पड़ती है, चाहे व शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर आर्थिक या फिर राजनीतिक व वैज्ञानिक।

वैश्वीकरण के अंतर्गत आज विश्व बड़ी सीमा तक एक वैश्विक ग्राम दिखाई दे रहा है, परन्तु यह उपरी दिखावा अधिक प्रतीत होता है। विकासशील देश भी यथाशीघ्र विकसित होने की लालच में वैश्वीकरण की प्रक्रिया में शामिल होना चाहते है, परन्तु इससे उनको कई समस्याओं का सामना करना पड़ा रहा है। जिसमें गरीबी एवं अशाति की स्थिति गंभीर समस्या का रूप में उभर का सामने आयी है। वैश्विक अंशाति समग्र मानव समाज के लिए खतरा है, इसका समाधान समग्र मानवता में ही संभव है जंहा हमें दिखाई देती है, एशिया के ज्योति पुंज बुद्ध के शांति व अहिंसा व विचारों मे जिससे सिर्फ हमारा देश ही नही बल्कि विश्व समाज में भी शांति व्यवस्था स्थापित की जा सकती है।

शतपथ ब्राह्मण में उल्लिखित विदेघमाथव द्वारा वैश्वानर अग्नि अपने मुख में रखकर सदानीरा के उत्तरण विषयक आख्यान ने इस भ्रान्त धारणा को प्रचलित किया कि सरयूपार एवं गंडक घाटी मे 'आर्यजनों का प्रसरण उत्तरवैदिक युग में हुआ। इस धारणा ने वैदिक एवं पौराणित साहित्य में विवृत्त इक्ष्वाकुवंशीय चरितों की प्राचीनता की उपेक्षा की जिनके आस्तित्व के आधार पर यह सिद्ध किया जा सकता है कि कुशीनगर उत्तरवैदिक युग से भी प्राचीनतर है।

रामायण रघुवंश तथा जातकों के समवेत साक्ष्य रूप यह सूचित करते हैं कि आरंभ में कोसल–कुसिनारा में सूर्यवंशी इक्ष्वाकुओं का शासन था और मल्ल उनके वंशज थे। एतद्विषयक कुस जातक की कथा मल्ल जाति के पूर्व से पश्चिमत क व्यापक राजनीतिक प्रभाव का संकेत करती है। इसमें कहा गया है कि कुसिनारा में ओक्काक (इक्ष्वाकु) नामक राजा थे।

महाकाव्यों एवं बौद्धग्रन्थों में प्राप्त मल्लों के सन्दर्भ उनके इतिहास के सातत्य को प्रमाणित करतें है। वाल्मिकि रामायण के अनुसार इक्ष्वाकुवंशी रामचन्द्र ने कारूपथ का राज्य लक्ष्मण के दो पुत्रों–अंगद एवं चन्द्रकेतु मल्ल–में विभाजित किया। प्राप्त प्रदेशों में अगंद ने अंदगीया तथा चन्द्रकेतु ने चन्द्रकान्ता को अपनी राजधानी बनायी। रामचन्द्र ने अपने पुत्रों कुश एवं लव को क्रमशः कुशावती शरावती का प्रदेश दिया। बाद में कुश ने कुशावती को अपनी नयी राजधानी बनायी। तभी से कुशावती मल्लों की राजधानी के रूप में विश्रुत हुई और बुद्ध के काल में भी विख्यात रही। कुसिनारा एवं पावा के मल्ल जनपद हिरज्जवती (हिरण्यवती) नदी द्वारा विभाजित थे। बौद्ध ग्रन्थों में इसे कुसिनारा, कुसिनगरी, कुसिग्राम आदि अनेक नामों से अभिहित किया गया है। बुद्धपूर्व युग में यह कुसावती के नाम से प्रसिद्ध था।

उ0 प्र0 की धारा को गौतम बुद्ध जैसे महान मानवतावादी, अहिंसा व शांति के पथ प्रदर्शक की चरण–रज से कृतार्थ होने का गौरव प्राप्त है। गौतम बुद्ध मानवता एवं विश्ववंधुत्व की भावना को जन–जन में संचार करने के उद्धेश्य से व्यापक रूप से देशारज किया। दया व करूणा के सागर के श्री चरणों से पूर्वी उ0 प्र0 के कुशीनगर की भी महिमान्वित होने का गौरव प्राप्त हुआ, जिस स्थल को बुद्ध ने अपनी अंतिम स्थली चुनी, जिसके फलस्वरूप यह स्थली राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय जंगल के लिए पूजनीय, वंदनीय व दर्शनीय बन गया। यही कारण है कि यहॉ ने केवल भारत बल्कि जापान, थाईलैण्ड, ताईवान,

चीन, कोठिया एवं वर्मा सहित विश्व के अनेक देशो के श्रद्धालु बड़ी संख्या में यहॉ आकर श्रद्धा सुमन अर्पित करने में अपने आपको धन्य समझते है और बौद्ध दर्शन अंहिसा व शांति को प्रचारित करते है।

1861–62 में सर्वप्रथम कंनिघम ने कुशीनगर की पहचान की थी और देवरिय से 30 किमी0 उत्तर (26, 45 उ0 83 55 पू0) कसया तथा पास के अनुरूधवा ग्राम को प्राचीन कुसिनारा बताया था। विभिन्न चरणो में ए0 सी0 कार्यालय, जे0 पी0 एच0 फोगेल तथा पं0 हीरानन्द शास्त्री द्वारा कराए गए उत्खननों के परिणाम स्वरूप महापरिनिर्वाण स्तूप, मु कुटबंधन स्तूप, महापरिनिर्वाण चैत्य, अनेक छोटे स्तूप और बिहारों की संरचना प्रकाश में आयी। यहां से बौद्ध एवं ब्राह्मण धर्मों के कालावशेष प्राप्त हुए। यहां के बौद्ध भवनों का निर्माण मौर्य काल में आरंभ हुआ था। गुप्तकाल तक यहां के बहुसंख्य स्मारकों का सतत ह्रास एवं पुननिर्माण होता रहा। यहां के महापरिनिर्वाण स्तुप से स्वर्ण, रजत एवं ताम्र धातुरण्डक मिले जो निदान सूत्र से अंकित ताम्रपत्र से ढके ताम्रघट में रखे गये थे। यह ताम्रघट गुप्तकाल में स्थापित किया गया था। अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियों मे वे मृत्तिका मुहरें है जिन पर बौद्ध मंत्र तथा घटनाओं का अंकन है। मुकुट बंधन चैत्य का उल्लेख करने वाली मुहर पर बुद्ध की चिंता का अंकन है। अन्य महापरिनिर्वाण मुहरों पर बुद्ध की अंतिम शरूया के प्रतीक शालवृक्षों के मध्य ढ़के मंचक का चित्र है।

कुसिनारा के समीप मल्लों का शालवन उपवत्तन था जहां अब महापरिनिर्वाण चैत्य एवं स्तूप है। यहीं बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था। उस समय यह इतना छोटा नगर (जंगल में नगर क्षेत्र की शाखा) था कि इसे प्रथम द्रष्ट्या बुद्ध के परिनिर्वाण के लिए उपयुक्त नहीं समझा गया। यहां टाट एवं मिट्टी के लेप के मकान थे। यह एक प्रमुख स्थल मार्ग (राजगृह से श्रावस्ती) पर स्थित था। यह हिरण्यवती नदी के पश्चिमी तट के समीप था। संभवतः कुछ और पश्चिम की ओर इस नदी को अजितवती कहा जाता था क्योकि जीवनी के अनुसार नगर से 3 या 4 ली0 उत्तर पश्चिम में अजितवती को उसके पश्चिमी तट पर पारकर युवान च्वांग शलवन में पहुचा था। इस नदी की पहचान छोटी गंडक से की गयी। युवान च्वांग के समय नगर की परिधि मात्र (10 ली0 ल03 किमी0) रह गयी थी।

बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात उनके पट्ट शिष्य आनन्द राजगृह चले गये और अनिरूद्ध मल्लों को सान्त्वना देने के लिए रह गये। समीप ही खनुआ नाले के पूर्व में स्थित अनिरूधवा गांव के नाम में अनिरूद्ध की स्मृति सुरक्षित है। गांव के समीप पुरावशेषों का टीला भी है। परिनिर्वाण का समाचार सुनने के बाद पावा से कुशीनगर आते हुए महाकाश्यप ने एक स्थान पर रूककर भोजन एवं विश्राम किया। वह स्थान आज कसया (कश्यप का अपभ्रंश) हो सकता है। फाहियान की यात्रा के समय कुशीनगर भग्नावस्था में था। इसके नगर एवं ग्राम वीरान और बंजर थे।

मानव को इस संसार में सुखमय जीवन जीने की कला प्राप्त हो जाय तो सबकुछ प्राप्त हो गया। जिसे नही प्राप्त हुआ वह मनुष्य ही नहीं हो सकता तो मानव जीवन ही निरर्थक हो गया। जिस शान्ति एवं सत्य मार्ग से चले उसे उसी प्रकार बतलाये भी इसीलिये तो तथागत है। तथ्यता के सहारे चलते–चलते तथागत हो गये। उनके शान्ति के सन्देश से तो सम्पूर्ण त्रिपिटक ही भरा पड़ा है।

शान्त अर्थात है भिक्षुओं, मानव समुदाय वैर से वैर शान्ति नही होता। दुर्भावनाओं से दुर्भावनाओं को दबाया नहीं जा सकता है। कुदाचनं (विरोध भाव से) समन्वय स्थापित न ही हो सकता। शान्ति नहीं आ सकती, चित्त व्याकुल ही रहेगा। वैर रहित हो कर निरवैर भाव से ही शान्ति या समन्वय स्थापित हो सकता है। धर्म की यह परम्परा प्राचीन काल से हो चली आ रही है।

इस भौतिकवादी युग में मनुष्य, धन, यश, लाभ, सुख को प्राप्त करने के लिये, चोरी, हत्या आदि शील के मार्ग से हटकर दुस्सीलया दुराचार के मार्ग पर चलता है। तृण्णा, क्रोध, विकार, काम आशक्ति के ज्वाला में धधक रहा है। स्वाभाविक है इस उद्विग्न अवस्था में उसे मानव की परिभाषा भूल जाय और वह दानवाना के मार्ग को ही अपना धर्म समझाकर अनर्थ करता हुआ चला जाता है। इतना भ्रमित हो जाता है कि कुशल अकुशल का ज्ञान ही लुप्त हो जाता है। धर्म और शान्ति का मार्ग त्यागकर अधर्म एवं अशान्ति का मार्ग पकड़ लेता है। अपने ही बुद्धि, कर्म को कारण भव चक्र में पिसता रहता है। उस दुःख के कारण को अन्यत्र देखता है किसी काल्पनिक शक्ति की देन मानता है। यदि वैर भाव दुर्भावनाओं से विरत हो जाता तो शान्ति और सुख का जीवन जीता। मनुष्य अपने दुःख और अशान्ति का कारण

स्वंय है अपने अविद्या अज्ञानता के कारण। शान्ति के मार्ग पर चलने के लिये भगवान ने जो मार्ग दिया उसमें बतलाया।

मनुष्य को चाहिये कि अपने जैसे ही संसार के समस्त प्राणियों को समझे। सभी प्राणियों के प्रति मैत्री भाव का ही कामना करें। समस्त जीवधारियों के दुःख की अनुभूति करें, जैसे मुझे बीमार होने पर भूखा होने पर प्यास लगने पर, थकावट लगने पर, गाली सुनने पर अपमानित होने पर कष्ट होता है उसी प्रकार दूसरों को भी कष्ट होता होगा, अत एवं किसी को अपमानित मत करो, चांटे मत मारो, व्यंगवाण से मत वेधो, सम्मान, प्यार देते हुए, भूख लगने पर भोजन दो, प्यासे को पानी, रूग्ण को औषधि, नंगे को वस्त्र देकर उसके दुःख को दूर करो या हिस्सेदार बनो। हे मानव जो बाते, व्यवहार आचरण तुम्हें अच्छा न लगे वह अन्य लोगों को कभी मत दो जो तुम्हें अच्छा लगे वही बांटते चले, तुम्हारे पास सदाचार सद्गुण की झोली भरी है। वितरित करो दुःखो को दूर करो करूणा की ही वर्षा करों इसीलिये तुम मनुष्य हो। यदि मानवी गुणों से इतर जाते हो तो अविलम्ब, अंकलिकों, अमनुष्य अथवा पशु हो जाओंगें'। करूणा, प्यार मे भी सदाचार शील देने के लिये तुम्हें अर्थव्यय नहीं करना है। इन सद्गुणों को संग्रह करो फिर वितरित करो अपने मानव जीवन को जो बहुत ही दुर्लभ हैं उसे सार्थक बनाओं जैसे मे सुखी हूँ संसार के सभी प्राणी सुखी हो।

''सुखी भवेय्यं निदुक्खं, अहं निच्चं अर्ह वियं।
हिता च में सुखी होन्तु, मज्झत्थ च थ वेरिनों।।''

जिस प्रकार में अपने सुखी रहने की कामना करता हूँ कि मैं नित्य ही सुखी रहूँ दुखी न होउं। सुखी ही रहूं इसी प्रकार समस्त प्राणी नित्य ही दुःख रहित रहें। मेरे हितैषी हो खूब सुखी रहे उसी प्रकार मध्यस्तता करने वाले हो या मेरे शत्रु हो सुखी रहें। सारे संसार के सभी प्राणी के प्रति विना भेद भाव, के सुख की मंगल कामना करें।

वास्तव में जिसका चित्त परिशुद्ध होगा वही कल्याणं बांटकर विश्व में शान्ति का सन्देश देकर शान्ति स्थापित कर सकेगा। पूजा उसी का सफल है जिसका चित्त परशिुद्ध है।

''इमाय बुद्ध पूजाय, कताय सुद्ध चेतसा।
चिरतिट्ठतिसद्धम्मो, लोको होतु सुखी सदा।।''

बुद्ध का चिंतन सर्वोदयी समाज व्यवस्था का चिंतन है। बुद्ध ने सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह के साथ अपने मन को अखण्ड ब्रह्मचर्य की अग्नि में जैसा तपाया था, उसकी तुलना अन्यत्र कम ही मिलती है। उनके द्वारा प्रतिपादित सर्वोदयी समाज की स्थापना से स्पष्ट होता है कि अहिंसामयी धर्म की पुर्नस्थापना से विश्व की समस्त मानव जाति का कल्याण सम्भव है। भगवान् तथागत के पथप्रदर्षक उपदेश एवं शिक्षायें जन–जन में ही नहीं बल्कि कण–कण में उत्थान का जयघोष करते है। उत्थान का जयघोष करते है। भगवान बुद्ध का समत्व का उपदेश समाज में समता का घोतक है। जिस समाज में समता होती है वहां जाति, धर्म आदि के बन्धनों का आस्तित्व स्वमेव समाप्त हो जाता है। बुद्ध ने अहिंसा पर सर्वाधिक बल दिया। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसका मुख्य कारण यह है कि हो सकता है कि अहिंसा में उन्माद का कोई स्थान नहीं है। अहिंसा तो एक ऐसी अबोध शक्ति है जिससे जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाता है। अंधकार और आलोक, सत्य और असत्य, चोरी और अचौर्य, जय एवं पराजय की समस्त सम्भावनायें अहिंसा के सागर में विलुप्त हो जाती है। मानवीय भेदभाव की जिस समस्या से आज हम जुझ रहे है, भगवान बुद्ध ने अपने उपदेशों एवं सिद्धान्तों से–विषमता को सुधारने का जो मार्गदर्शन दिया, वह आज के वैश्विीकरण के युग में अधिक व्यवहारिक एवं कल्याणकारी प्रतीत होता है। मानव कल्याण के लिए उनकी शिक्षायें व उपदेशों की पुर्नस्थापना आज अधिक प्रासंगिक है। बौद्धत्व की घोषणा है कि दुःखो से मुक्ति सम्भव है और इसे इसी जीवन में उपलब्ध किया जा सकता है। अति संबोधि के अनुभव से प्राप्त भागवत संदेश को तथागत ने बड़े यत्नपूर्वक लोगों को समझाया और जलते–सुलझते मानवीय अन्तःकरण में दया, करूणा, सहिष्णुता, उदारता जैसे उदान्त भावों की सजलधारा बहा दी।

पूर्वी उ0 प्र0 का यह कुशीनगर आज बुद्ध की उसी विचार को विश्व के अन्य देशों में प्रचारित कर रहा है जो शांति व समृद्ध का था। पूर्वी उ0 प्र0 का यह पिछड़ा क्षेत्र कुशीनगर आज उन विचारो की

अगुआई कर रहा है जो बुद्ध ने दिये और अपने को इसी स्थल पर स्थान दे दिया। वैश्वीकरण के दौर में आज विश्व भौतिक साधनों एवं आर्थिक साधनों को हड़पने मे सारी शक्ति लगा रहा है, लेकिन इस वैश्विक अशाति के दौर में अगर किसी विचार एवं कार्य पद्धति की जरूरत है तो बुद्ध के शाति व अहिंसा के पाठ को वैश्विक मंच पर स्थापित करने की। कुशीनगर की पावन भूमि पर बुद्ध महापरिनिर्वाण मंदिर में बुद्ध की लेटी हुई प्रतिमा यही संदेश देती है कि शांति समृद्धि का स्त्रोत है और अगर कोई राष्ट्र या विश्व समुदाय प्रगति कर सकता है तो शांति व अहिंसा दर्शन प्रासंगिक है तो सिर्फ इसलिए की वह प्रेम व सहयोग के साथ हिंसा को रोकता है, जो बुद्ध दर्शन के अहिसा व शान्ति से ही आया है, आज सेकई हजार वर्ष पूर्व बौद्धी अशोक ने जो शांति सम्मेलन आयोजित कर विश्व शांति में सफलता प्राप्त की थी वह सिर्फ बौद्ध दर्शन ही था, अतः आज वैश्वीकरण के दौर मे यह कुशीनगर उसी शांति का अवबोध विश्व को कर रहा है।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद में पौरू–कुत्स इक्ष्वाकु, पौरूकुस्सि और पौरू–कुत्पय के सन्दर्भ है जिनसे आशय है– इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न माता से जात–पुरू कुत्स का पुत्र, पुरूकुत्स का वंशज त्रसदरतु का पैतृत नाम। ऋग्वेद 7,19,3, 5,33,8 8,19,36, वैदिक इण्डेक्स (मैक्डानल्ड, कीथ), हिन्दी अनुवाद–रामकुमार राय, भाग–2 वाराणसी, 1962
2. ब0रा0 उत्तरकाण्ड–102–9
3. कालिदास–रघुवंश 16, 1–22
4. जतक–5, पृ0–360–70
5. पूर्वोक्त, चन्द्र के ताश्च मल्लस्य मल्ल भूम्य निवेशिता।
   चन्द्रकौन्तिति विरव्याता दिव्या स्वर्गपूरी गाथा।।
6. म0 प0 सु0 (पालि पाठ), पृ0 292
7. दीघ– 2 पृ0 146, 170 भूतपुर्व––––अयं कुसिनारा कुसावती नाम राजधानी अहोसि। जातक–1, पृ0 392, जातक–5, पृ0 278, दीपवसं 3,9
8. आ0 रि0 1875–77 (जि0 18), पृ0 92, 1905–6, पृ0 77, इंडियन कल्चर जि0 13पृ0 125 एवं अनु0 धर्मरक्षित–कुशीनगर का इतिहास पृ0–120
9. आ0 रि0 1910–11 पृ0–62ण
10. वही।
11. एस0 बी0 सि–यू–की पृ0–31,
12. दीक्षित, आर0के0, कुशीनगर, पृ0–4,
13. वाटर्स, युवान च्वांग–2, पृ0–25,
14. सी–यू–की, पृ0–3
15. वही, पृ0–26, 31–32,
16. अशोक और अहिसा श्री चि0ग0कर्वे–धर्मदूत मासिक–दिसम्बर 1949, महाबोधि महासभा, सारनाथ, वाराणसी।
17. डॉ0 वी0 आर0 अम्बेडकर–बुद्ध और उनका धम्भ– 1950
18. एस0 राधाकृष्णन–इंडियन किलॉसोफी–खण्ड–1,
19. युगुल किशोर–बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता।
20. भिक्खु धर्मरक्षित–कुशीनगर का इतिहास।
21. डॉ0 जय प्रकाश कर्दम–बौद्ध धर्म के आधार स्तम्भ।
22. डॉ0 धर्मकीर्ति–बुद्ध का समाज दर्शन।
23. महा पंडित राहुल सांकृत्यायन–महापरिनिब्बान सुत्त।
24. महापंडित राहुल सांकृत्यायन–विनय पिटक।
25. युगुल किशोर–बुद्ध की परिनिर्वाण स्थली.....कुशीनगर
26. प्रे0 तारााम–बौद्ध धर्म का मूल तत्व।
27. धर्मानन्द कोसम्बी–भारतीय संस्कृती और अहिंसा।